

The Greenwich Study

ईंटे, मनके तथा अस्थियाँ-हड़प्पा
सभ्यता

(Bricks, Beads and Bones The Harappan
Civilisation)

- By Kavi Pramod Namdev

हड़प्पा सभ्यता का नामकरण

2

- हड़प्पा(वर्तमान पाकिस्तान) नामक स्थान जहाँ यह संस्कृति सर्वप्रथम खोजी गई थी उसी के नाम पर इतिहासकारों ने इसका नामकरण सुनिश्चित किया गया है। इसका काल निर्धारण लगभग 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व के बीच किया गया है। इस संस्कृति को सिन्धु घाटी सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, इसके अधिकतर महत्वपूर्ण क्षेत्र वर्तमान पाकिस्तान में खोजे गए हैं ।
- सिंधु घाटी सभ्यता मिस्र,मेसोपोटामिया,भारत और चीन की चार सबसे बड़ी प्राचीन नगरीय सभ्यताओं से भी अधिक उन्नत थी।
- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा किये गए सिंधु घाटी के उत्खनन से प्राप्त अवशेषों से हड़प्पा(1921) तथा मोहनजोदड़ो(1922) जैसे दो प्राचीन नगरों की खोज हुई।
- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के तत्कालीन डायरेक्टर जनरल सर जॉन मार्शल ने विश्व पटल पर सन 1924 में सिंधु नदी घाटी क्षेत्र में एक नई सभ्यता की खोज की घोषणा की।

सिंधु घाटी सभ्यता के चरण

3

हड़प्पा संस्कृति को क्रमशः तीन चरणों में विभक्त किया गया है जो इस प्रकार हैं

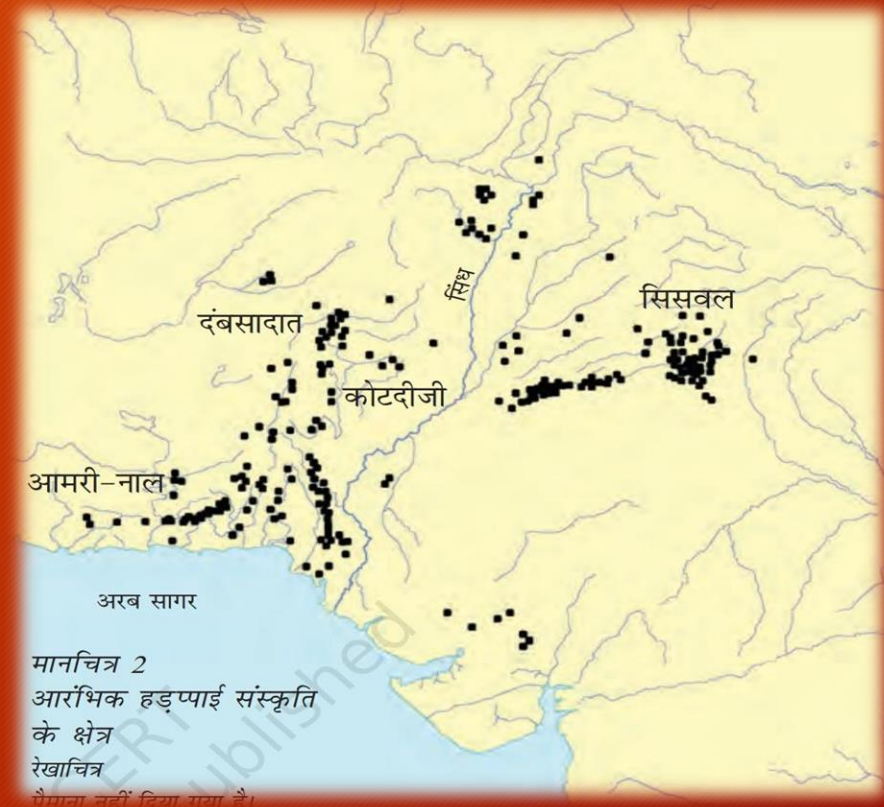
- प्रारंभिक हड़प्पाई सभ्यता (3300ई.पू.-2600ई.पू. तक)
 - विकसित हड़प्पाई सभ्यता (2600ई.पू.-1900ई.पू. तक)
 - उत्तर हड़प्पाई सभ्यता (1900ई.पू.-1300ई.पू. तक)
-
- B.C.E (Before Christ or Before Common Era) - ईसा पूर्व
 - A.D (Anno Domini) - ईसा मसीह का जन्म वर्ष ।
 - B.P (Before Present) - वर्तमान से पूर्व



हड़प्पा संस्कृति के खुदाई स्थल से मिले खाद्य एवं कृषिगत पुरावशेष

4

- अनाज - गेहूँ, जौ, दाल, सफ़ेद चना तथा तिल और बाजरे के दाने गुजरात के स्थलों से प्राप्त हुए हैं।
- जानवरों की हड्डियाँ - भेड़, बकरी, भैंस, सूअर और वृषभ (बैल) आदि का प्रयोग कृषि कार्यों के लिए किया जाता था।
- मछलियाँ और पक्षी के अवशेष मिले हैं।
- हड़प्पा संस्कृति के पुरातात्विक साक्ष्य एवं जानकारी के प्रमुख स्रोत
 - आवास
 - मृदभांड
 - आभूषण
 - औजार
 - मुहरें
 - इमारतें और खुदाई से मिले सिक्के।



हड़प्पाई संस्कृति के प्रमुख क्षेत्र

5

- सिन्धु सभ्यता का विस्तार उत्तर में माण्डा (जम्मू) से लेकर दक्षिण में दैमाबाद (उत्तरी महाराष्ट्र) तक और पूर्व में आलमगीरपुर (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) से लेकर पश्चिम में सुत्कागेंडोर (बलुचिस्तान) तक है। दूसरे शब्दों में, सिन्धु सभ्यता की उत्तरी सीमा मांडा, दक्षिणी सीमा दैमाबाद, पूर्वी सीमा आलमगीरपुर एवं पश्चिमी सीमा सुत्कागेंडोर है। यह समूचा क्षेत्र त्रिभुज के आकार का है जिसका शीर्ष पश्चिम में तथा आधार पूर्व में उत्तर-दक्षिण की दिशा में है।
- हड़प्पा सभ्यता का कुल क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग किमी. है। अनुमानतः इस सभ्यता का विस्तार उत्तर से दक्षिण तक 1100 किमी. तथा पूर्व से पश्चिम तक 1550 से 1600 किमी. है।

कृषि के अवशेष

6

- चोलिस्तान के कई स्थलों और बनावली (हरियाणा) से मिट्टी से बने हल के प्रतिरूप मिले हैं।
- इसके अतिरिक्त पुरातत्वविदों को कालीबंगन (राजस्थान) नामक स्थान पर जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है जो आरंभिक हड़प्पा स्तरों से संबद्ध है।
- अफगानिस्तान में शोर्तुघई नामक हड़प्पा स्थल से नहरों के कुछ अवशेष मिले हैं।
- धौलावीरा (गुजरात) में मिले जलाशयों का प्रयोग संभवतः कृषि के लिए जल संचयन हेतु किया जाता था।
- भारतीय पुरातत्व का जनक : जनरल अलेक्जेंडर कनिंघम (1863-64 and 1872-73)

हड़प्पा सभ्यता की बस्तियाँ

7

हड़प्पा सभ्यता की बस्तियाँ दो भागों में विभाजित थी -

- **दुर्ग** : ये कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी होती थी | दुर्ग को दीवारों से घेरा गया था | दुर्ग पर बनी संरचनाओं का प्रयोग संभवतः विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोग के लिए किया जाता था |
- **निचला शहर** : निचला शहर आवासीय भवनों के उदाहरण प्रस्तुत करता है | निचला शहर भी दीवार से घेरा गया था | इसके अतिरिक्त कई भवनों को ऊँचे चबूतरों पर बनाया गया था जो नींव का कार्य करते थे

हड़प्पा सभ्यता की सडकों और गलियों की विशेषताएँ

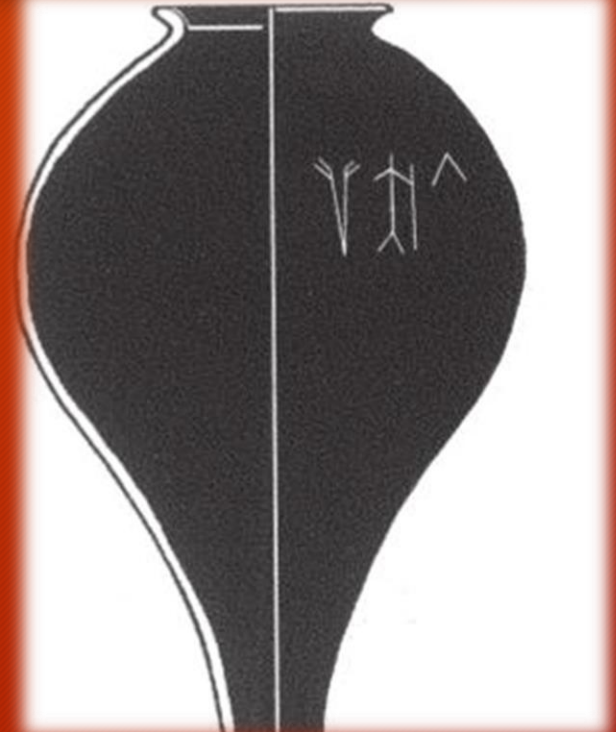
8

- हड़प्पा सभ्यता में सडकों तथा गलियों को लगभग एक ग्रिड, पद्धति पर बनाया गया था ।
- ये एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
- जल निकास प्रणाली अनूठी थी घरो के गन्दे पानी की नालियों को गली की नालियों से जोड़ा गया था।
- सडकों के साथ-साथ नालियों को बनाया गया था ।
- सडकों और गलियों के अगल-बगल आवासों को बनाया गया था ।

हड़प्पा सभ्यता में सिंचाई के प्रमुख स्रोत

9

- नहरें
- कुएँ
- जलाशय



विशाल स्नानागार की विशेषताएँ

10

- एक आयताकार जलाशय है। जो चारों ओर से एक गलियारे से घिरा हुआ है। जलाशय के तल तक जाने के लिए सीढ़ियां बनी थीं।
- विशाल स्नानागार को हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख इमारतों में गिना जाता है। यह मोहनजोदड़ो के गढ़ी क्षेत्र से प्राप्त हुआ है।
- इसे परिसर इसलिये कहा गया क्योंकि इसमें स्नानागार के साथ-साथ तीन ओर बरामदे हैं, बरामदे पर ही कमरा, सीढ़ी, तालाब और कुआँ स्थित है।

मनकों के निर्माण में प्रयुक्त पदार्थ

11

- कार्नी लियन (सुन्दर लाल रंग का) जैस्पर, स्फटिक, क्वार्ट्ज तथा सेलखड़ी जैसे पत्थर - तांबा, काँसा तथा सोने जैसी, धातुएँ तथा शंख, फायॉन्स और पकी मिट्टी, सभी का प्रयोग मनके बनाने में होता था। इनके आकार जैसे - चक्राकार, बेलनाकार, गोलाकार तथा खंडित होते थे।

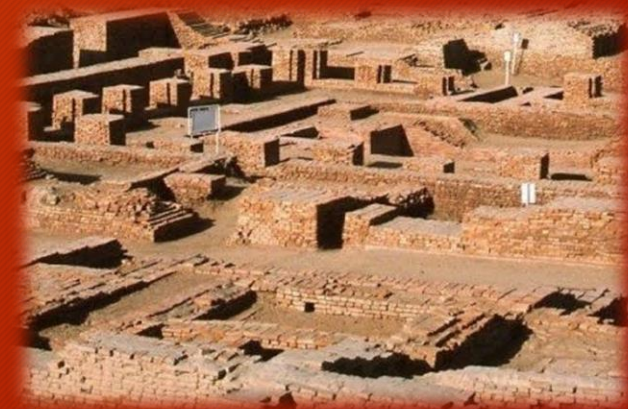


बस्ती के नियोजन कार्य की विशेषताएँ

12

बस्ती का नियोजन किया गया था और फिर उसके अनुसार कार्यान्वयन किया गया था जिसका उदाहरण हमें यहाँ की बनी ईंटों से पता चलता है ।

- जो धूप में सुखाकर अथवा भट्टी में पकाकर बनाई गई थी ।
- एक निश्चित अनुपात की होती थीं, जहाँ लंबाई और चौड़ाई, ऊँचाई की क्रमशः चार गुनी और दोगुनी होती थी।
- इस प्रकार की ईंटें सभी हड़प्पा बस्तियों में प्रयोग में लाई गई थीं।



हड़प्पा संस्कृति की जल निकासी प्रणाली की विशेषताएँ

13

- नालियां पक्की ईंटों से बनाई गयी थी।
- सड़कों के साथ-साथ नालियाँ बनाई गयी थी।
- यदि घरों के गंदे पानी को गलियों की नालियों से जोड़ना था तो प्रत्येक घर की कम से कम एक दीवार का गली से सटा होना आवश्यक था।
- नालियों को ऐसे ईंटों से ढका गया था जिसे नाली सफाई के समय आसानी से हटाया जा सके।
- कुछ स्थानों पर ढँकने के लिए चूना पत्थर की पट्टिका का प्रयोग किया गया था।
- घरों की नालियाँ पहले एक हौदी या मलकुंड में खाली होती थीं जिसमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था और गंदा पानी गली की नालियों में बह जाता था।
- बहुत लंबे नालों में कुछ अंतरालों पर सफाई के लिए हौदियाँ बनाई गई थीं।

आवासीय व्यवस्था / गृह स्थापत्य कला की विशेषताएँ

14

- नालियां पक्की ईंटों से बनाई गयी थी।
- सडकों के साथ-साथ नालियाँ बनाई गयी थी।
- यदि घरों के गंदे पानी को गलियों की नालियों से जोड़ना था तो प्रत्येक घर की कम से कम एक दीवार का गली से सटा होना आवश्यक था।
- नालियों को ऐसे ईंटों से ढका गया था जिसे नाली सफाई के समय आसानी से हटाया जा सके।
- कुछ स्थानों पर ढँकने के लिए चूना पत्थर की पट्टिका का प्रयोग किया गया था।
- घरों की नालियाँ पहले एक हौदी या मलकुंड में खाली होती थीं जिसमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था और गंदा पानी गली की नालियों में बह जाता था।
- बहुत लंबे नालों में कुछ अंतरालों पर सफाई के लिए हौदियाँ बनाई गई थीं।

आवासीय व्यवस्था / गृह स्थापत्य कला की विशेषताएँ

15

- कई आवास एक आँगन पर केन्द्रित थे जिसके चारों ओर कमरे बने थे। संभवतः आँगन, खाना पकाने और कटाई करने जैसी गतिविधियों का केंद्र था।
- भूमि तल पर बनी दीवारों में खिड़कियाँ नहीं हैं।
- इसके अतिरिक्त मुख्य द्वार से आंतरिक भाग अथवा आँगन को सीधा नहीं देख सकते थे।
- हर घर का ईंटों के फर्श से बना अपना एक स्नानघर होता था जिसकी नालियाँ दीवार के माध्यम से सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थीं।
- कुछ घरों में दूसरे तल या छत पर जाने हेतु बनाई गई सीढ़ियों के अवशेष मिले थे।
- कई आवासों में कुएँ थे जो अधिकांशतः एक ऐसे कक्ष में बनाए गए थे जिसमें बाहर से आया जा सकता था और जिनका प्रयोग संभवतः राहगीरों द्वारा किया जाता था।
- मोहनजोदड़ो में कुओं की कुल संख्या लगभग 700 थी ।

शिल्प-उत्पादन कार्य

16

- मनके बनाना, शंख की कटाई, धातुकर्म, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना इत्यादि ।
- **चन्हुदडो** : यह छोटी 7 हेक्टेयर में फैली बस्ती जो शिल्पकार्य में संलग्न थी ।
- **मनकों के आकार** : जैसे - चक्राकार, बेलनाकार, गोलाकार, ढोलाकार तथा खंडित आकार के होते हैं ।
- **उत्पादन केन्द्रों की पहचान** : शिल्प-उत्पादन के केन्द्रों की पहचान के लिए पुरातत्वविद सामान्यतः निम्नलिखित को ढूँढ़ते हैं:
 - (i) प्रस्तर पिंड, (ii) पूरे शंख तथा (iii) ताँबा-अयस्क जैसा कच्चा माल, इसके अलावा
 - (iv) औजार, अपूर्ण वस्तुएँ त्याग दिया गया माल तथा कूड़ा-करकट ।
- **पुरातात्विक अध्ययन के लिए कूड़ा-करकट एक अच्छा संकेतक माना जाता है** : कभी-कभी बड़े बेकार टुकड़ों को छोटे आकार की वस्तुएँ बनाने के लिए प्रयोग किया जाता था परंतु बहुत छोटे टुकड़ों को कार्यस्थल पर ही छोड़ दिया जाता था। ये टुकड़े इस ओर संकेत करते हैं कि छोटे, विशिष्ट केन्द्रों के अतिरिक्त मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा जैसे बड़े शहरों में भी शिल्प उत्पादन का कार्य किया जाता था

माल प्राप्त करने के तरीके

17

- शिल्प उत्पादन के लिए कई प्रकार के कच्चे माल जैसे - मिट्टी, पत्थर, लकड़ी, धातु आदि बाहर के क्षेत्रों से मँगाने पड़ते थे।
- इन वस्तुओं के मँगाने के परिवहन साधन में बैलगाड़ी स्थल मार्ग के लिए जबकि सिन्धु तथा उसके उपनदियों के बगल में बने नदी मार्गों तथा तटीय मार्गों का प्रयोग होता था।
- हड़प्पावासी नागेश्वर और बालाकोट में जहाँ शंख आसानी से उपलब्ध था, बस्तियाँ स्थापित कीं।
- अन्य पुरस्थालों सुदूर अफगानिस्तान में शोर्तघुई , जो अत्यंत कीमती माने जाने वाले नीले रंग के पत्थर लाजवर्द मणि के सबसे अच्छे स्रोत के निकट स्थित था
- लोथल (गुजरात में भड़ौच) जो कार्नीलियन नामक मूल्यवान रत्न के लिए प्रसिद्ध था, तथा सेलखड़ी (दक्षिणी राजस्थान तथा उत्तरी गुजरात से) और धातु (राजस्थान के खेतड़ी से जिसमें तांबा या ताम्र महत्वपूर्ण था) के स्रोत के निकट स्थित था।
- ताम्बे के लिए राजस्थान के खेतड़ी अंचल तथा सोने के लिए दक्षिण भारत जैसे क्षेत्रों में अभियान भेजा जाता था जो स्थानीय समुदाय से संपर्क स्थापित करते थे

सुदूर क्षेत्रों से संपर्क के साक्ष्य

18

- हाल ही में हुई पुरातात्विक खोजें इंगित करती हैं कि ताँबा संभवतः अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर स्थित ओमान से भी लाया जाता था। रासायनिक विश्लेषण दर्शाता है कि ओमानी ताँबे तथा हड़प्पाई पुरावस्तुओं, दोनों में निकल के अंश मिले हैं जो दोनों के साझा विदेशी व्यापार की ओर संकेत करते हैं।
- बड़ा हड़प्पाई मर्तबान जिसके ऊपर काली मिट्टी की एक मोटी परत चढ़ाई गई थी, ओमानी स्थलों से मिला है। ऐसी मोटी परतें तरल पदार्थों के रिसाव को रोक देती हैं। ऐसा माना जाता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग इनमें रखे सामान का ओमानी ताँबे से विनिमय करते थे।
- मेसोपोटामिया के स्थलों से मिले ताँबे में भी निकल के अंश मिले हैं। लंबी दूरी के संपर्कों की ओर संकेत करने वाली अन्य पुरातात्विक खोजों में हड़प्पाई मुहरें, बाट, पासे तथा मनके शामिल हैं।
- मुहरें तथा मुद्रांकन का प्रयोग : मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग लंबी दूरी के संपर्कों को सुविधाजनक बनाने के लिए होता था। सुदूर भेजे जाने वाले वस्तुओं के थैलों को बाँधकर उसकी रस्सी को मिट्टी लगाकर मुहरों से मुद्रांकित कर दिया जाता था। जिससे प्रेषक (भेजने वाला) की पहचान हो जाती थी और वस्तुएँ सुरक्षित अन्य स्थानों तक पहुँचा दिया जाता था।

हड़प्पाई मुहरों / लिपि की विशेषताएँ

19

- इस पर एक रहस्यमयी भावचित्रात्मक लिपि अंकित होती है जो संभवतः नेतृत्व कर्ता के नाम उसके पद को दर्शाता था ।
- इस पर बने चित्र निरक्षर लोगों को सांकेतिक रूप से इसका अर्थ बताता था ।
- यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी । और इसमें लगभग 375 - 400 चिह्न मौजूद थे ।
- इस लिपि को अब तक पढ़ा नहीं जा सका है इसलिए इन्हें रहस्यमयी लिपि कहते हैं ।
- अब तक प्राप्त लिखावट वाली वस्तुएँ
 - मुहरें, ताँबे के औजार, मर्तबान (मिट्टी के बर्तन) ताँबे तथा मिट्टी की लघु पट्टिकाएं(जिस पर अब तक अधिकतम एक साथ लिखे 26 चित्राक्षर प्राप्त हुए हैं), आभूषण, अस्थियां तथा प्राचीन सूचना पट्ट ।

बाट एवं माप तौल की पद्धतियाँ

20

- विनिमय बाटों की एक सूक्ष्म या परिशुद्ध प्रणाली द्वारा नियंत्रित थे।
- ये बाट सामान्यतः चर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे और आमतौर पर ये किसी भी तरह के निशान से रहित घनाकार होते थे।
- इन बाटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32 इत्यादि 12,800 तक) थे जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे।
- छोटे बाटों का प्रयोग संभवतः आभूषणों और मनकों को तौलने के लिए किया जाता था।

सिंधु घाटी सभ्यता/हड़प्पा सभ्यता का पतन

21

- **जलवायु परिवर्तन** : कुछ विद्वानों का तर्क है कि हड़प्पा सभ्यता अंत जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, अत्यधिक बाढ़ नदियों का सुख जाना (वर्षा के स्वरूप में भिन्नता के कारण) या उनका मार्ग बदल लेना है।
- **शहरों का पतन तथा परित्याग** : कुछ विद्वानों के इस तर्क को बल मिलता है कि इस सभ्यता में आए विषम परिस्थितियों के कारण यहाँ के निवासी शहरों को त्याग दिये या शहरों का पतन हो गया।
- सिंधु घाटी सभ्यता का लगभग 1800 ई.पू. में पतन हो गया था, परंतु उसके पतन के कारण अभी भी विवादित हैं।
- एक सिद्धांत यह कहता है कि इंडो -यूरोपियन जनजातियों जैसे- आर्यों ने सिंधु घाटी सभ्यता पर आक्रमण कर दिया तथा उसे हरा दिया।
- सिंधु घाटी सभ्यता के बाद की संस्कृतियों में ऐसे कई तत्व पाए गए जिनसे कदाचित यह सिद्ध होता है कि यह सभ्यता अन्य जातियों के आक्रमण के कारण एकदम विलुप्त नहीं हुई थी।
- यह भी कहा जाता है कि सिंधु घाटी सभ्यता के क्षेत्र में अत्यधिक विवर्तिनिकी प्राकृतिक हलचलों की बारम्बार आवृत्तियों के कारण अत्यधिक मात्रा में भूकंपों की उत्पत्ति हुई। जिसके कारण धरातलीय स्थलाकृतियों में उच्चावच एवम निम्नावच के कारण नदियों द्वारा अपना मार्ग बदलने के कारण खाद्य उत्पादन क्षेत्रों में बाढ़ के हालात पैदा हो गए, और निवासियों को अन्यत्र गमन करना पड़ा।
- विभिन्न प्राकृतिक प्रकोपों के कारण अवश्यम्भावी सिंधु घाटी सभ्यता का अंत एवम पतन का दौर मंद गति से ही माना जाता है।

कनिंघम का भ्रम अथवा कनिंघम द्वारा हड़प्पा के महत्व को समझने में हुई भूल

22

- कनिंघम उत्खनन के समय ऐसी पुरावस्तुओं खोजने का प्रयास करते थे जो उनके विचार से सांस्कृतिक महत्व की थी।
- हड़प्पा जैसे पुरास्थल कनिंघम के खोज कार्य की प्रकृति से बिल्कुल अलग था क्योंकि हड़प्पा जैसा पुरास्थल चीनी यात्रियों के यात्रा-कार्यक्रम का हिस्सा नहीं था और न कोई आरंभिक ऐतिहासिक शहर था, इसी कारण विदेशी स्त्रोतों से इस सभ्यता के बेहद कम जानकारी के तथ्य प्राप्त होते हैं।
- हड़प्पा कनिंघम के खोज के ढाँचें में उपयुक्त नहीं बैठता था।
- हड़प्पाई पुरावस्तुएँ उन्नीसवीं शताब्दी में कभी-कभी मिलती थीं और इनमें से कुछ तो कनिंघम तक पहुँची भी थीं, फिर भी वह समझ नहीं पाए कि ये पुरावस्तुएँ कितनी प्राचीन थीं और एक प्राचीन संस्कृति कि परिचायक।
- कनिंघम का मानना था कि भारतीय इतिहास का आरम्भ गंगा की घाटी में पनपे पहले शहरों के साथ ही हुआ था। चूँकि उनकी अवधारणा सुनिश्चित थी इसलिए वे हड़प्पा के महत्व को समझने में चुक गए।

दुर्ग की विशेषताएँ

23

- दुर्ग निचले शहर से ऊपर एक चबूतरे पर बसा हुआ क्षेत्र है । इस पर कई बड़ी इमारतें मिलती हैं ।
- जिस पर माल गोदाम, विशाल स्नानागार और एक स्तूप बना था । स्नानागार को चारों तरफ से जिप्सम और गारे की सहायता से जलबद्ध किया गया था ।
- इसमें उत्तर और दक्षिण की ओर सीढ़ियाँ हैं ।
- स्नानागार के तीन तरफ कमरे बने हुए हैं जिसमें एक कुआँ भी है ।
- सम्भवतः इसका प्रयोग स्नानागार में जल भरने के लिए किया जाता होगा ।
- स्नानागार से निकलने वाला जल बगल के नाले में गिरता था ।
- पुरातत्वविदों का ऐसा मानना है कि यह स्थान किसी अनुष्ठान कार्य के लिए उपयोग में लाई जाती थी ।
- दुर्ग पर एक टीला भी मिलता है ।
- जहाँ पर कई मृत शरीर पाए गए थे ।
- यहाँ पर एक स्तूप बना हुआ है ।
- दुर्ग की जांच पड़ताल से यह पता चलता है कि इसका निर्माण खासतौर से अनुष्ठान इस कार्य के लिए ही किया गया था ।



जॉन मार्शल : हड़प्पा सभ्यता को विश्व पटल पर रखने वाले ब्रिटिश अधिकारी

24

- 1924 में जॉन मार्शल भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल बने ।
- उन्होंने पूरे विश्व के समक्ष सिंधु घाटी में एक नवीन सभ्यता की खोज की घोषणा की ।
- भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल के रूप में जॉन मार्शल का कार्यकाल वास्तव में भारतीय पुरातत्व में एक व्यापक परिवर्तन का काल था ।
- यह भारत में कार्य करने वाले पहले पेशेवर पुरातत्वविद थे ।
- वे यहां यूनानी तथा क्रीट में अपने कार्यों का अनुभव लेकर आये थे।
- हालांकि अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि कनिंघम की तरह ही उन्हें भी आकर्षक खोजों में दिलचस्पी थी, पर उनमें दैनिक जीवन की पद्धति को जानने की भी उत्सुकता थी ।

आर. ई. एम. व्हीलर: सिन्धु घाटी सभ्यता के अन्वेषण में योगदान

25

- आर. ई. एम. व्हीलर का पूरा नाम रॉबर्ट एरिक मॉर्टिमर व्हीलर था । यह एक ब्रिटिश पुरातत्ववेत्ता और अधिकारी थे ।
- व्हीलर को 1944 में (आरकेलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का डायरेक्टर जनरल बनाया गया ।
- अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने भारत में कई जगह उत्खनन कार्य करवाया जैसे ब्रह्मगिरि(महाराष्ट्र), अरिकमेडू(पुद्दुचेरी) और हड़प्पा ।
- व्हीलर की हड़प्पा सभ्यता में विशेष रूचि थी, उन्होंने मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के उत्खनन में विशेष रूचि ली
- व्हीलर ने पहचाना कि एक समान क्षैतिज इकाइयों के आधार पर खुदाई की बजाय टीले के स्तर विन्यास का अनुसरण करना अधिक आवश्यक है ।
- साथ ही सेना के पूर्व ब्रिगेडियर के रूप में उन्होंने पुरातत्व के पद्धति में एक सैनिक परिशुद्धता का समावेश भी किया ।

प्रमुख पूरास्थल - हड़प्पा

26

हड़प्पा रावी नदी के किनारे पंजाब के मोटेगोमरी जिले में स्थित है। इसकी खुदाई दयाराम साहनी एवम माधोस्वरूप वत्स (सहायक) के नेतृत्व में वर्ष 1921 ई. में हुई। यह शहर विभाजित है, यहां पश्चिमी भाग में दुर्ग बस्तियाँ हैं और पूर्वी भाग में निचले शहर विद्यमान है। हड़प्पा में छः-छः के दो कतारों में विशाल अन्नागार (धान के कोठार) मिले हैं। अनाजों के दाबने के लिए एक चबूतरा बना था। इसमें जौ एवं गेहूँ के दाने मिले हैं। दो कतारों में 15 मकान मिले हैं। इनकी पहचान श्रमिक आवास के रूप में हुई है। द. क्षेत्र में एक (सेमेट्री) कब्रिस्तान आर-37 है। यहाँ बालू पत्थर की दो मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इनसे शरीर संरचना का ज्ञान मिलता है। एक बरतन पर मछुआरे का चित्र बना मिला है। शंख का बना हुआ एक बैल भी मिला है। कांस्य दर्पण भी यहाँ से प्राप्त हुए हैं। सिन्धु सभ्यता की अभिलेखयुक्त मुहरें सर्वाधिक हड़प्पा से ही प्राप्त हुई हैं।

मोहनजोदड़ो

27

यह सिन्धु के लरकाना जिले में स्थित है। यह सिंधु नदी के किनारे अवस्थित है। इसका अर्थ है- मृतकों का टीला। 1922 ई. में इसकी खुदाई राखलदास बनर्जी के निर्देशन में करायी गई। यहाँ से एक सभागार (एसेम्बली हाल), पुरोहितों का आवास एवं विशाल स्नानागार के प्रमाण मिले हैं। यहाँ कपास निर्मित सूती वस्त्रों के साक्ष्य मिले हैं। मोहनजोदड़ो में 16 मकानों का भाग मिला है। एक हिस्से को अर्नेस्ट मैके ने दुकान कहा है जबकि पिगॉट महोदय ने इन्हें कुली लाइन कहा है। काँसे की एक नग्न नर्तकी की मूर्ति मिली है। यहीं से दाढ़ी वाले पुरोहित की एक मूर्ति प्राप्त हुई है। पशुपति शिव का साक्ष्य भी यहीं मिला है। यहीं कुम्हार के छः भट्टों (चिमनी) के अवशेष मिले हैं। हाथी का कपाल खंड मिला है। यहां गले हुए ताँबे का ढेर मिला है। यहाँ राणाघुडई नामक क्षेत्रों से घोड़े के दांत के अवशेष मिले हैं।

चन्हुदड़ो (सिन्ध)

28

एन.जी. मजुमदार के प्रयास से 1931 में इसकी खोज हुई। 1935 में मैके ने इस कार्य को आगे बढ़ाया। यह स्थल सिंध में मोहनजोदड़ो 130 कि.मी. दक्षिण में स्थित है। यहाँ से मनके बनाने का एक कारखाना प्राप्त हुआ है। उत्तर-हड़प्पा (झूकर एवं झांगर संस्कृति) संस्कृति इस स्थल पर विकसित हुई। इस स्थल पर बिल्ली एवम कुत्ते का साक्ष्य मिला है। सौंदर्य प्रसाधन में लिपस्टिक का प्रमाण मिला है। चान्हुदड़ो एकमात्र ऐसा स्थल है जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं।

यह गुजरात के अहमदाबाद जिले में पड़ता है। यह भोगवा नदी के किनारे अवस्थित है। 1957 में इसकी खोज रंगनाथ राव ने की। इस स्थल का आकार आयताकार है। लोथल के पूर्वी भाग में गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड) का साक्ष्य मिला है। यह 214 मीटर × गहराई 3.3 मीटर का है। लोथल में दुर्ग एवं निचले शहर के बीच विभाजन नहीं है। उत्खननों से लोथल की जो नगर-योजना और अन्य भौतिक वस्तुएँ प्रकाश में आयी हैं, उनसे लोथल एक लघु हड़प्पा या मोहनजोदड़ो नगर प्रतीत होता है। अग्निवेदिका का साक्ष्य लोथल से मिलता है। यहाँ चावल का साक्ष्य मिलता है। फारस की एक मुहर प्राप्त हुई है। यहीं घोड़े की लघु मृणमूर्ति प्राप्त हुई है तथा हाथी दांत का एक स्केल प्राप्त हुआ है। तीन युग्मित समाधि (तीनों जुड़े) प्राप्त हुई है। एक मकान से दरवाजा मुख्य सड़क की ओर खुलने का प्रमाण मिलता है। अनाज पीसने की चक्की का साक्ष्य भी मिलता है। लोथल से प्राप्त एक भांड पर ही चालाक लोमड़ी की कथा अंकित है।

इसका अर्थ है काले रंग की चूड़ियाँ। घग्गर नदी के तट पर यह राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में स्थित है। दुर्गक्षेत्र का आकार वर्गाकार है। इस क्षेत्र के उत्खननकर्ता अमलानन्द घोष (1953) और बी.के. थापर (1960) हैं। पूर्व-हड़प्पा सभ्यता का यहाँ से साक्ष्य भी मिलता है। यहाँ ईंट के चबूतरे पर सात हवन कुड का साक्ष्य मिलता है। कालीबंगा में कच्ची ईंटों का प्रयोग हुआ है। यहाँ जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है। कालीबंगा में अधिक दूरी पर सरसों की फसल बोयी जाती थी तथा कम दूरी पर चना बोया जाता था। यहाँ अलंकृत ईंटों का साक्ष्य मिला है। कालीबंगा में लकड़ी के पाइप का प्रमाण मिला है। कालीबंगा में दोनों खंड दुर्गों से घिरे थे। यहाँ से प्राप्त बेलनाकार मुहरें मेसोपोटामिया से प्राप्त मुहरों के समरूप थीं।

यह हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है। इसकी खोज 1973 ई. में आर.एस. बिष्ट द्वारा की गई। यहाँ से दो सांस्कृतिक अवस्थाएँ प्राप्त हुई हैं। हड़प्पा पूर्व और हड़प्पाकालीन। यहाँ अच्छे किस्म का जौ प्राप्त हुआ है। बनवाली से ताँबे का वाणाग्र प्राप्त हुआ है। यहाँ से हल की आकृति का खिलौना प्राप्त हुआ है। यहाँ नाली पद्धति का अभाव है। यहाँ से ताँबे की कुल्हाड़ी प्राप्त हुई है। बनवाली की नगर-योजना शतरंज के बिसात या जाल के आकार की बनायी गयी थी। सड़कें न तो सीधी मिलती हैं और न एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं। यहाँ से पत्थर एवं मिट्टी के मकानों के साक्ष्य मिलते हैं। यहाँ से सड़कों पर बैलगाड़ियों के पहियों के निशान मिले हैं।

सतलुज नदी के किनारे यह पंजाब में स्थित है। 1953-54 में यहाँ खुदाई यज्ञदत्त शर्मा के अन्तर्गत कराई गई। यहाँ से हड़प्पा-पूर्व और हड़प्पाकालीन अवशेष प्राप्त होता है। यहाँ से ताँबे की कुल्हाड़ी प्राप्त हुई है। यहाँ के एक कब्रगाह में आदमी के साथ कुत्ते को दफनाए जाने का भी साक्ष्य मिला है। रोपड़ से संस्कृति के पाँच स्तर प्राप्त हुए हैं जो इस प्रकार हैं- हड़प्पा, चित्रित धूसर मृदभांड, उत्तरी काले पॉलिस वाले, कुषाण, गुप्त और मध्यकालीन मृदभांड।

सुरकोटड़ा, आलमगीरपुर, रंगपुर

33

सुरकोटड़ा

यह गुजरात के कच्छ प्रदेश में स्थित है। उत्खनन का काम जगपति जोशी के अधीन 1964 में किया गया। यहाँ से घोड़े की अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं। साथ ही यहाँ एक अनोखे कब्रगाह का साक्ष्य मिला है।

आलमगीरपुर

हिण्डन नदी के किनारे यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में स्थित है। इसकी खुदाई यज्ञदत्त शर्मा ने 1958 में कराई। यह हड़प्पा सभ्यता के अन्तिम चरण को प्रदर्शित करता है।

रंगपुर

यह गुजरात के काठियावाड़ जिले में स्थित है। यह मादर नदी के समीप है। इसकी खुदाई 1953-54 में रंगनाथ राव के अन्तर्गत करायी गई। यहाँ से उत्तर हड़प्पा संस्कृति का साक्ष्य मिलता है। यहाँ धान की भूसी का साक्ष्य मिला है। यहाँ कच्ची ईंटों का दुर्ग भी मिला है।

सुत्कोगेडोर, कोटदीजी, राखीगढ़ी

34

सुत्कोगेडोर

यह स्थल बलूचिस्तान में दाश्क नदी के किनारे स्थित है। इसकी खुदाई 1927 में औरेल स्टाइन के अधीन की गई। यहाँ से परिपक्व हड़प्पा काल का साक्ष्य मिला है। यहाँ से मनुष्य की अस्थि, राख से भरा बर्तन, ताँबे की कुल्हाड़ी और मिट्टी से बनी चूड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।

कोटदीजी

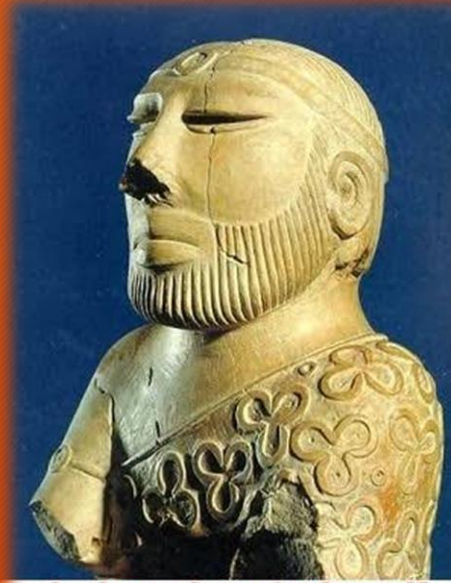
यह मोहनजोदडो से 50 कि.मी. पूर्व में स्थित है। इसकी खुदाई (1955-57) में एफ.ए. खान ने कराई। इसके अलावा अन्य स्थलों के बारे में भी महत्वपूर्ण तथ्य हैं। आमरी में बारहसींगा का नमूना मिला है। सर्वप्रथम सिंधु सभ्यता के लोगों ने ही चाँदी का उपयोग किया। धौलावीरा भारत में स्थित सबसे बड़ा हड़प्पा स्थल है। दूसरा बड़ा स्थल राखीगढ़ी है। सम्पूर्ण सिंधु सभ्यता के स्थलों में क्षेत्रफल की दृष्टि से धौलावीरा का स्थान चौथा है।

राखीगढ़ी

हरियाणा के हिसार जिले में सरस्वती तथा दुहद्वती नदियों के शुष्क क्षेत्र में राखीगढ़ी, सिन्धु सभ्यता का भारतीय क्षेत्र में धौलावीरा के बाद, दूसरा विशालकाय नगर है। इसका उत्खनन व्यापक पैमाने पर 1997-99 के दौरान अमरेन्द्र नाथ के द्वारा किया गया। राखीगढ़ी से प्राक हड़प्पा एवं परिपक्व हड़प्पा युग इन दोनों कालों के प्रमाण मिले हैं।

यह स्थल गुजरात के कच्छ जिले के मचाऊ तालुका में मानसर एवं मानहर नदियों के मध्य अवस्थित हैं। इसकी खोज जगपति जोशी ने 1967-68 में की परन्तु इसका विस्तृत उत्खनन रवीन्द्र सिंह विष्ट के द्वारा किया गया। यह ऐसा प्रथम नगर है जो तीन भागों में विभाजित था- दुर्गभाग, मध्यम नगर तथा निचला नगर। यहाँ से 16 विभिन्न आकार-प्रकार के जलाशय मिले हैं, जो एक अनूठी जल संग्रहण व्यवस्था का चित्र प्रस्तुत करते हैं। धौलावीरा नगर के दुर्ग भाग एवं मध्यम भाग के मध्य एक भव्य इमारत के अवशेष, चारों ओर दर्शकों को बैठने के लिए बनी हुई सीढ़ियों को, इंगित करते हैं। धौलावीरा से दस बड़े अक्षरों में लिखा एक सूचना पट्ट का प्रमाण मिला है।

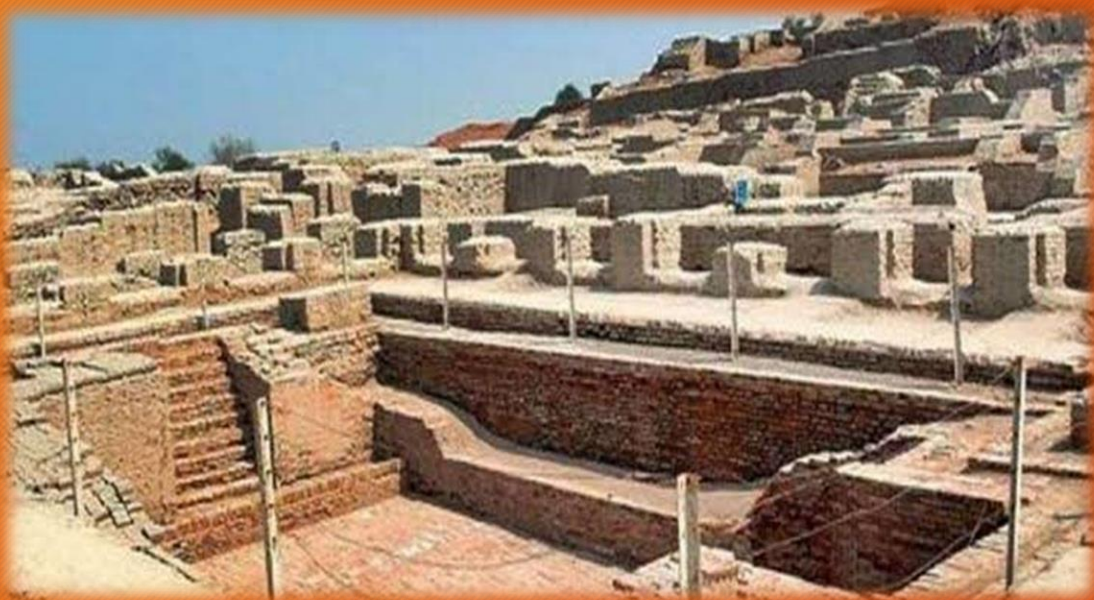




दाढ़ी वाले पुरुष की पत्थर से बनी एक मूर्ति।



चित्र 1.4
पात के औजार



38



Thank you...

Please like and subscribe this channel.

The Greenwich Study
Kavi Pramod Namdev
Lecturer, Jodhpur (Raj.)